3

संधि
(Joining)

संधि का शाब्दिक अर्थ है—मेल। लेकिन व्याकरण में संधि का अर्थ दो अथवा दो से अधिक ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) से होता है।

इन उदाहरणों को देखिए–

विद्या	+ आलय	= विद्यालय	आ	+ आ	= आ	दीर्घ स्वर	+ दीर्घ स्वर	= दीर्घ
रवि	+ इंद्र	= रवींद्र	इ	+ इ	= ई	ह्रस्व स्वर	+ ह्रस्व स्वर	= दीर्घ
धर्म	+ अर्थ	= धर्मार्थ	अ	+ अ	= आ	ह्रस्व स्वर	+ ह्रस्व स्वर	= दीर्घ
हिम	+ आलय	= हिमालय	अ	+ आ	= आ	ह्रस्व स्वर	+ दीर्घ स्वर	= दीर्घ

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि :

दो ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे **संधि** कहते हैं।

विशेष : संधि करते समय इस बात का ध्यान रखें कि दो शब्दों या पदों के मेल से एक सार्थक शब्द बने।

संधि-विच्छेद (Disjoining) : संधियुक्त शब्दों को अलग-अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे—

धर्मात्मा = धर्म + आत्मा तल्लीन = तत् + लीन छात्रावास = छात्र + आवास

संधि के भेद (Kinds of Joining)

संधि के तीन भेद हैं जो इस प्रकार हैं :

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

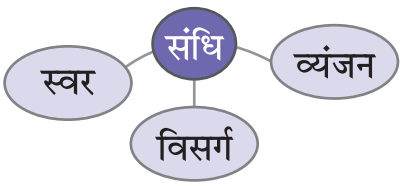

1. स्वर संधि (Joining of Vowels)

दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे—

रचना + आकार = रचनाकार सूर्य + उदय = सूर्योदय प्रति + एक = प्रत्येक

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :

क. दीर्घ संधि ख. गुण संधि ग. वृद्धि संधि घ. यण संधि ङ. अयादि संधि

क. दीर्घ संधि : यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर 'अ', 'इ', 'उ' के बाद अन्य ह्रस्व या दीर्घ स्वर 'अ'/'आ', 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ' आ जाए, तो दोनों मिलकर क्रमशः दीर्घ स्वर—आ, ई, ऊ बन जाते हैं; जैसे—

अ	+ अ	= आ	मत	+ अनुसार	= मतानुसार	राम	+ अवतार	= रामावतार
अ	+ आ	= आ	पुस्तक	+ आलय	= पुस्तकालय	सचिव	+ आलय	= सचिवालय
आ	+ अ	= आ	यथा	+ अर्थ	= यथार्थ	विद्या	+ अर्थी	= विद्यार्थी
आ	+ आ	= आ	राजा	+ आज्ञा	= राजाज्ञा	महा	+ आत्मा	= महात्मा
इ	+ इ	= ई	कवि	+ इंद्र	= कवींद्र	अति	+ इव	= अतीव
इ	+ ई	= ई	हरि	+ ईश	= हरीश	प्रति	+ ईक्षा	= प्रतीक्षा
ई	+ इ	= ई	नारी	+ इष्ट	= नारीष्ट	नारी	+ इच्छा	= नारीच्छा

ई	+ ई	= ई	सती	+ ईश	= सतीश	नारी	+ ईश्वर	= नारीश्वर
उ	+ उ	= ऊ	सु	+ उक्ति	= सूक्ति	लघु	+ उत्तर	= लघूत्तर
उ	+ ऊ	= ऊ	लघु	+ ऊर्मि	= लघूर्मि	मधु	+ ऊष्मा	= मधूष्मा
ऊ	+ उ	= ऊ	वधू	+ उत्सव	= वधूत्सव	भू	+ उत्सर्ग	= भूत्सर्ग
ऊ	+ ऊ	= ऊ	वधू	+ ऊर्मि	= वधूर्मि	भू	+ ऊर्जा	= भूर्जा

ख. गुण संधि : यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ', 'ऋ' आ जाए, तो दोनों के मिलने पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है; जैसे—

अ	+ इ	= ए	नर	+ इंद्र	= नरेंद्र	भारत	+ इंदु	= भारतेंदु
आ	+ इ	= ए	राजा	+ इंद्र	= राजेंद्र	महा	+ इंद्र	= महेंद्र
अ	+ ई	= ए	नर	+ ईश	= नरेश	परम	+ ईश्वर	= परमेश्वर
आ	+ ई	= ए	महा	+ ईश	= महेश	कमला	+ ईश	= कमलेश
अ	+ उ	= ओ	चंद्र	+ उदय	= चंद्रोदय	पर	+ उपकार	= परोपकार
अ	+ ऊ	= ओ	जल	+ ऊर्मि	= जलोर्मि	नव	+ ऊढ़ा	= नवोढ़ा
आ	+ उ	= ओ	महा	+ उदय	= महोदय	महा	+ उत्सव	= महोत्सव
आ	+ ऊ	= ओ	महा	+ ऊष्मा	= महोष्मा	गंगा	+ ऊर्मि	= गंगोर्मि
अ	+ ऋ	= अर्	राज	+ ऋषि	= राजर्षि	सप्त	+ ऋषि	= सप्तर्षि
आ	+ ऋ	= अर्	ब्रह्मा	+ ऋषि	= ब्रह्मर्षि	महा	+ ऋषि	= महर्षि

ग. वृद्धि संधि : यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो, तो दोनों के स्थान पर ऐ; 'ओ' या 'औ' हो, तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है; जैसे—

अ	+ ए	= ऐ	एक	+ एक	= एकैक	लोक	+ एषणा	= लोकैषण
आ	+ ए	= ऐ	सदा	+ एव	= सदैव	तथा	+ एव	= तथैव
अ	+ ऐ	= ऐ	धन	+ ऐश्वर्य	= धनैश्वर्य	मत	+ ऐक्य	= मतैक्य
आ	+ ऐ	= ऐ	महा	+ ऐश्वर्य	= महैश्वर्य	रमा	+ ऐश्वर्य	= रमैश्वर्य
अ	+ ओ	= औ	दंत	+ ओष्ठ	= दंतौष्ठ	परम	+ ओज	= परमौज
अ	+ औ	= औ	जन	+ औदार्य	= जनौदार्य	वन	+ औषध	= वनौषध
आ	+ औ	= औ	महा	+ औदार्य	= महौदार्य	महा	+ औषध	= महौषध

घ. यण संधि : यदि 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ', 'ऋ' के बाद कोई अन्य स्वर आए, तो 'इ'/'ई' के स्थान पर य; 'उ'/'ऊ' के स्थान पर व तथा 'ऋ' के स्थान पर र् हो जाता है; जैसे—

इ	+ अ	= य	अति	+ अधिक	= अत्यधिक	अति	+ अंत	= अत्यंत
इ	+ आ	= या	अति	+ आचार	= अत्याचार	इति	+ आदि	= इत्यादि
ई	+ अ	= य	देवी	+ अर्पण	= देव्यर्पण	नदी	+ अर्पण	= नद्यर्पण
ई	+ आ	= या	नदी	+ आगमन	= नद्यागमन	सखी	+ आगमन	= सख्यागमन
उ	+ अ	= व	अनु	+ अय	= अन्वय	मनु	+ अंतर	= मन्वंतर
उ	+ आ	= वा	सु	+ आगत	= स्वागत	गुरु	+ आकृति	= गुर्वाकृति

उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति	अनु + इत = अन्वित
उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण	प्रभु + एषणा = प्रभ्वेषणा
ऋ + उ = रु	मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश	पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश
ऋ + आ = रा	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ङ. अयादि संधि : यदि 'ए'/'ऐ', 'ओ'/'औ' से आगे कोई इनसे भिन्न स्वर आ जाए, तो 'ए' का अय्; 'ओ' का अव् तथा 'औ' का आव् हो जाता है; जैसे—

ए + अ = अय्	ने + अन = नयन	शे + अन = शयन
ऐ + अ = आय्	नै + अक = नायक	गै + अक = गायक
ओ + अ = अव्	पो + अन = पवन	भो + अन = भवन
औ + अ = आव्	पौ + अन = पावन	पौ + अक = पावक
ऐ + इ = आयि	गै + इका = गायिका	नै + इका = नायिका
ओ + इ = अवि	पो + इत्र = पवित्र	भो + इष्य = भविष्य

2. व्यंजन संधि (Joining of Consonants)

किसी व्यंजन का व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—

दिक् + अंबर = दिगंबर (क् + अ = ग ➤ व्यंजन + स्वर)
दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग ➤ व्यंजन + व्यंजन)

कुछ अन्य उदाहरण–

जगत् + ईश = जगदीश (त् + ई = दी ➤ व्यंजन + स्वर)
उत् + ज्वल = उज्ज्वल (त् + ज् = ज्ज् ➤ व्यंजन + व्यंजन)
सम् + देह = संदेह (म् + द = न्द ➤ व्यंजन + व्यंजन)
सम् + सार = संसार (म् + स = न्स ➤ व्यंजन + व्यंजन)
उत् + लास = उल्लास (त् + ल = ल्ल ➤ व्यंजन + व्यंजन)
सम् + बंध = संबंध (म् + ब = म्ब ➤ व्यंजन + व्यंजन)
जगत् + नाथ = जगन्नाथ (त् + न = न्न ➤ व्यंजन + व्यंजन)

3. विसर्ग संधि (Joining of Visarga)

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे—

मनः + बल = मनोबल   निः + धन = निर्धन   निः + रोग = नीरोग

कुछ अन्य उदाहरण :

दुः + बल = दुर्बल	निः + आकार = निराकार	निः + रस = नीरस
निः + मल = निर्मल	मनः + रंजन = मनोरंजन	निः + नय = निर्णय
दुः + कर्म = दुष्कर्म	निः + पक्ष = निष्पक्ष	नमः + ते = नमस्ते

विशेष : व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि के विषय में विस्तार से अगली कक्षा में अध्ययन करेंगे।

आओ दोहराएँ

- दो ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं।
- संधियुक्त शब्दों को अलग-अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है।
- संधि के तीन भेद हैं: स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि।
- दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।
- स्वर संधि के पाँच भेद हैं: दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि।
- किसी व्यंजन का व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर व्यंजन में उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।
- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

अब बताइए

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न** (MULTIPLE CHOICE QUESTIONS)

1. दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. दो ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल का क्या कहते हैं?

(a) संधि ☐ (b) समास ☐ (c) शब्द ☐ (d) इनमें से कोई नहीं ☐

ख. संधियुक्त शब्दों को अलग-अलग करना क्या कहलाता है?

(a) समास-विग्रह ☐ (b) समस्त पद ☐ (c) संधि-विच्छेद ☐ (d) (a) और (b) ☐

ग. स्वर संधि के कितने भेद हैं?

(a) तीन ☐ (b) पाँच ☐ (c) दो ☐ (d) चार ☐

घ. 'वार्तालाप' का संधि-विच्छेद है:

(a) वार्ता + लाप ☐ (b) वात + लाप ☐ (c) वा + र्तालाप ☐ (d) वार्ता + आलाप ☐

ङ. 'संग्रह' का संधि-विच्छेद है:

(a) सं + ग्रह ☐ (b) सम + ग्रह ☐ (c) सम् + ग्रह ☐ (d) संग्र + ह ☐

च. 'महेश्वर' = महा + ईश्वर किस संधि का उदाहरण है?

(a) दीर्घ संधि ☐ (b) गुण संधि ☐ (c) व्यंजन संधि ☐ (d) यण संधि ☐

छ. 'दिगंबर' का संधि-विच्छेद है:

(a) दिक् + अंबर ☐ (b) दिग् + अंबर ☐ (c) दि + अंबर ☐ (d) इनमें से कोई नहीं ☐

2. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) चिह्न लगाइए :

क. संधि का शाब्दिक अर्थ है—मेल। ☐

ख. संधि के चार भेद होते हैं। ☐

ग. स्वर संधि में केवल दो स्वरों का मेल होता है। ☐

घ. जगत् + नाथ = जगन्नाथ विसर्ग संधि का उदाहरण है। ☐

ङ. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं। ☐

3. उचित संधि पर गोला खींचिए :

क.	सु + उक्ति	= सुक्ति	सूक्ती	सूक्ति
ख.	निः + रोग	= नीरोग	निरोग	निरुग

ग. निः + णय	= निर्णय	निर्नय	निर्णय
घ. प्रति + ईक्षा	= प्रतिक्षा	प्रतीक्षा	प्रतीच्छा

4. सही संधि-विच्छेद के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. उज्ज्वल	= उत् + ज्वल ☐	उत् + जवल ☐	उत + ज्वल ☐
ख. वधूत्सव	= वधु + उत्सव ☐	वधू + ऊत्सव ☐	वधू + उत्सव ☐
ग. पावक	= पौ + अक ☐	पो + अक् ☐	पे + अक ☐
घ. रमैश्वर्य	= राम + ईश्वर ☐	रमा + ऐश्वर्य ☐	रमै + एश्वर्य ☐
ङ. संसार	= सन् + सार ☐	सत् + सार ☐	सम् + सार ☐

5. संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम भी लिखिए :

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम	शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
सचिवालय			हरीश		
राजेंद्र			जलोर्मि		
मतैक्य			महौदार्य		
अन्वेषण			गायक		
जगदीश			निर्मल		

6. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क. संधि से क्या आशय है? सोदाहरण लिखिए।

ख. संधि-विच्छेद से क्या आशय है? सोदाहरण लिखिए।

ग. संधि के कितने भेद हैं? नाम भी लिखिए।

घ. व्यंजन संधि किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

ङ. विसर्ग संधि से क्या आशय है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

7. संधि कीजिए :

उत् + लास = ________	निः + पक्ष = ________	पौ + अन = ________
सती + ईश = ________	भू + उत्सर्ग = ________	राज + ऋषि = ________
सदा + एव = ________	अति + अधिक = ________	पो + इत्र = ________
नमः + ते = ________	परीक्षा + अर्थी = ________	सूर्य + उदय = ________

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment)

❖ **अपनी हिंदी पाठ्य पुस्तक से दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, अयादि संधि तथा यण संधि के चार-चार उदाहरण छाँटकर लिखिए :**

- गुण संधि : ________ ________ ________ ________
- दीर्घ संधि : ________ ________ ________ ________
- वृद्धि संधि : ________ ________ ________ ________
- अयादि संधि : ________ ________ ________ ________
- यण संधि : ________ ________ ________ ________